Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
April 11, 2020
Kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

CLASS B.A. (SUBS) PART – II

DATE April11, 2020

TOPIC :- मीमांसा दर्शन में कर्मवाद

मीमांसा दर्शन के अनुसार जीवन का चरम लक्ष्य स्वर्ग की प्राप्ति करना है। स्वर्ग की प्राप्ति कर्म के द्वारा ही संभव है। मीमांसा दर्शन में कर्म को इतना महत्व दिया गया है, कि ईश्वर का अस्तित्व भी गौण हो गया है। ईश्वर का अस्तित्व तभी तक है, जब तक उसके नाम पर यज्ञ, हवन, बलि आदि होता है। कर्म के द्वारा ही मोक्ष या स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है। कर्म का अर्थ मीमांसा दर्शन में वैदिक कर्मकांड से हैं। वेद में अनेक प्रकार के कर्म बताए गए हैं, जिनमें मीमांसा दर्शन में पांच प्रकार के कर्म स्वीकारें गए हैं :–

1. नित्य कर्म,
2. नैमित्तिक कर्म,
3. काम्य कर्म
4. निषिद्ध कर्म और
5. प्रायश्चित कर्म

1. नित्य कर्म :– नित्य कर्म वह कर्म है, जो व्यक्ति द्वारा प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किया जाता है। जैसे स्नान, ध्यान, संध्या वंदन आदि। इन कर्मों के करने से पुण्य की प्राप्ति नहीं होती, किंतु इनके नहीं करने से पाप का उदय अवश्य होता है।

2. नैमित्तिक कर्म :– नैमित्तिक कर्म वैसे कर्मों को कहा जाता है जो किसी विशेष अवसरों पर किए जाते हैं। जैसे ग्रहण के समय किया जाने वाला गंगा स्नान या जन्म, मृत्यू, विवाह आदि अवसरों पर किए जाने वाले कर्म नैमित्तिक कर्म कहलाते हैं।

3.काम्य कर्म :– वैसे कर्म जो किसी निश्चित फल की प्राप्ति के उद्देश्य से किए जाते हैं, काम्य कर्म कहलाते हैं। जैसे स्वर्ग प्राप्ति, पुत्र की प्राप्ति के लिए जो हवन यज्ञादि कार्य किए जाते हैं, यह काम्य कर्म उदाहरण हैं। स्वर्ग प्राप्ति या मोक्ष की प्राप्ति के लिए किए गए कर्म भी काम्य कर्म के अंदर आते हैं। उन्हें करने से पुण्य की प्राप्ति होती है, परंतु इन कर्मों के नहीं करने से पाप का उदय नहीं होता है।

4. निषिद्ध कर्म :– निषिद्ध कर्म उन कर्मों को कहा जाता है, जिनको नहीं करने का आदेश वेदों में दिया गया है। उदाहरणार्थ चोरी, हिंसा आदि ऐसे कर्मों को नहीं करने से पुण्य की प्राप्ति नहीं होती, परंतु इनके करने से पाप का उदय होता है।

5. प्रायश्चित कर्म :– निषिद्ध कर्म के करने के बाद उनके अशुभ से बचने के लिए प्रायश्चित् कर्म किया जाता है। दूसरे शब्दों में यदि कोई व्यक्ति चोरी करता है तो उसके अशुभ फल से बचने के लिए जो कर्म करता है उसे प्रायश्चित कर्म कहते हैं। पुराने जमाने में इसके अंतर्गत स्वयं को आरी से कटवाने या पैसा

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)

Kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

देकर स्वयं को कोड़े से पिटवाने का प्रचलन था। ऐसे अनेकानेक कर्म है, जो प्रायश्चित कर्म के अंतर्गत आते हैं।

पांचों कर्मों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है :– **विधि और निषेध।** वैसे कर्म **जिनका पालन करने का आदेश वेदों में दिया गया है**, वह विधि कहलाते हैं। इसके अंतर्गत नित्य कर्म और नैमित्तिक कर्म आते हैं। इनका पालन इसलिए करना चाहिए क्योंकि वेद में वैसा करने के लिए आदेश किया गया है वेद नित्य ज्ञान का भंडार है एवं अपौरूषेय है। मीमांसा दर्शन में वैदिक कर्मकांड को ही धर्म माना गया है। अतः इसका पालन करना आवश्यक है। इसके विपरीत वैसे कर्म, **जिनको नहीं करने का आदेश वेद में दिया गया है या जिन का निषेध किया गया है,** उसे निषेध कहते हैं। इसके अंतर्गत निषिद्ध कर्म आते हैं। इन कर्मों का परित्याग करके ही जीवन के चरम लक्ष्य, अर्थात स्वर्ग की प्राप्ति की जा सकती है।

निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है, कि मीमांसा दर्शन में कर्म के दो भेद हैं– विधि और निषेध। विधि का पालन करना तथा निषेध का परित्याग करना उत्तम जीवन के लिए आवश्यक है।

Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
Department of Philosophy
Mobile 8210837290
Whatsapp 8271817619
E-mail Id – kumar999sonu@gmail.com